OM - 19- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/10/2021 11:46 AM Page 8



# परमात्म ऊर्जा

## पाप कर्मों से छुटकारा पाने का साधन - लाइट हाउस की स्थिति

सभी अपने को लाइट हाउस और माइट हाउस समझते हो? जहाँ लाइट होती है वहाँ कोई पाप का कर्म नहीं होता है। तो सदा लाइट हाउस रहने से माया कोई पाप कर्म नहीं करा सकती। सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे। ऐसे अपने को पुण्य आत्मा समझते हो? पुण्य आत्मा संकल्प में भी कोई पाप कर्म नहीं कर सकती। और पाप वहाँ होता है जहाँ बाप की याद नहीं होती। बाप है तो पाप नहीं, पाप है तो बाप नहीं। तो सदा कौन रहता है? पाप खत्म हो गया ना? जब पुण्य आत्मा के बच्चे हो तो पाप खत्म। तो आज से मैं पुण्य आत्मा हूँ पाप मेरे सामने आ नहीं सकता यह दृढ़ संकल्प करो। जो समझते हैं आज से पाप को स्वप्न में भी, संकल्प में भी नहीं आने देंगे वह हाथ उठाओ। दृढ़ संकल्प की तीली से 21 जन्मों के लिए पाप कर्म खत्म। बापदादा भी ऐसे हिम्मत रखने वाले बच्चों को मुबारक देते हैं। यह भी कितना भाग्य है जो स्वयं बाप बच्चों को मुबारक देते हैं। इसी स्मृति में सदा खुश रहो और सबको खुश बनाओ।

## साक्षीपन की सीट ही है शान की सीट

जो कुछ भी ड्रामा में होता है उसमें कल्याण ही भरा हुआ है, अगर यह स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी। समझदार बच्चे यही सोचेंगे कि जो कुछ होता है वह कल्याणकारी है। क्यों-क्या का क्वेश्चन समझदार के अन्दर उठ नहीं सकता। अगर स्मृति रहे कि यह संगमयुग कल्याणकारी युग है, बाप भी कल्याणकारी है तो श्रेष्ठ स्टेज बनती जायेगी। चाहे बाहर की रीति से नुकसान भी दिखाई दे लेकिन उस नुकसान में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा निश्चय हो। जब बाप का साथ और हाथ है तो अकल्याण हो नहीं सकता। अभी पेपर बहुत आयेंगे, उसमें क्या-क्यों का क्वेश्चन न उठे। कुछ भी होता है होने दो। बाप हमारा हम बाप के तो कोई कुछ नहीं कर सकता, इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि। बात बदल जाये लेकिन आप नहीं बदलो - यह है निश्चय। कभी भी माया से परे-शान तो नहीं होते हो? कभी वातारण से, कभी घर वालों से, कभी ब्राह्मणों से परेशान होते हो। शान की सीट पर रहो।

साक्षीपन की सीट शान की सीट है इससे परे न हो तो परेशानी खत्म जो जायेगी। प्रतिज्ञा करो कि कभी भी कोई बात में न परेशान होंगे, न करेंगे। जब नॉलेजफुल बाप के बच्चे बन गये, त्रिकालदर्शी बन गये तो परेशान कैसे हो सकते! संकल्प में भी परेशानी न हो। क्यों शब्द को समाप्त करो। क्यों शब्द के पीछे बड़ी क्यू है।

**आगरा-पिपल मंडी(उ.प्र.)।** स्लम स्टार एकेडमी के डायरेक्टर देव राजपूत ने स्लम बच्चों द्वारा आगरा शहर के कुछ समाजसेवी व शहर के लिए कुछ न कुछ योगदान देने वालों को सम्मानित करने की मुहीम चलाई है। इसी श्रृंखला में राजयोग एवं आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा जन सेवा करने हेतु ब्र.कु. ममता बहन को सेवाकेन्द्र में आकर छोटी बच्ची संध्या द्वारा सम्मान प्रदान किया।

# कथा सरिता

बहुत समय पहले की बात है गोविंद रानाडे हाई कोर्ट के जज थे। उनको बहुत सारी भाषाओं को सीखने का मन था, अपने इसी शौंक के कारण उन्होंने अनेक भाषाओं को सीख लिया था। लेकिन वो बांग्ला भाषा अभी तक नहीं सीख पाए थे, उन्होंने खूब प्रयास किया लेकिन सीख नहीं पाए। अंत में उनको एक उपाय सूझा, उन्होंने एक बंगाली नाई को बुलाया और उससे अपनी हजामत बनवानी शुरु कर दी। नाई देर तक हजामत बनाता, वे उससे बांग्ला भाषा सीखते रहते।

रानाडे की पत्नी को यह सब बहुत बुरा लग रहा था, उन्होंने अपने पति से कहा, आप हाई कोर्ट के जज होकर एक नाई से भाषा सीखते हैं। कोई देखेगा तो हमारी क्या इज्जत रह जाएगी, आपको बांग्ला सीखनी है तो किसी विद्वान को बुलाकर सीखो। रानाडे ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया, मैं तो ज्ञान का प्यासा हूँ, हमें जात-पात से क्या लेना-देना। यह बात सुनकर रानाडे की पत्नी को बहुत अफसोस हुआ और बोली आप सही हो।

**शिक्षा :-** इस कहानी से हमें यही सीखने को मिलता है कि ज्ञान कहीं से भी मिले, बस ले लो।

दो-तीन दिन पहले की बात है। अपनी आठ वर्षीय पुत्री को स्कूल से घर वापस लाने तीन बजे स्कूल के गेट पर पहुंच गया था। तीन बजकर दस मिनट से जूरियर के.जी. के छात्र बाहर आना शुरु करते हैं जबकि सीनियर छात्र तीन बजे से। गेट पर अभिभावकों की भीड़ लगी थी। एकाएक तेज बारिश शुरु हो गई। सभी ने अपनी छतरी तान ली। मेरे बगल में एक सज्जन बिना छतरी के खड़े थे। मैंने शिष्टाचार वश उन्हें अपनी छतरी में ले लिया।

गाड़ी से जल्दी-जल्दी में आ गया, छतरी नहीं ला सका, उन्होंने कहा।

मैंने कहा, "कोई बात नहीं ऐसा हो जाता है।"

जब उनका बेटा रेनकोट पहने निकला तो मैंने उन्हें छाते से गाड़ी तक छोड़ दिया। उन्होंने मुझे गौर से देखा और धन्यवाद कहकर चले गए।

कल रात नौ बजे पाटिल साहब का बेटा आया।

अंकल गाड़ी की ज़रूरत थी। रूबी(उसकी छः माह की बेटी) की तबीयत बहुत खराब है। उसे डॉक्टर के पास ले जाना है।

मैंने कहा, "चलो चलते हैं।"

अंधेरी, बरसाती रात में जब डॉक्टर के यहाँ हम पहुंचे तो दरवान गेट बंद कर रहा था। कम्पाउंडर ने बताया कि डॉ. साहब लास्ट पेशेंट देख रहे हैं, अब उठने ही वाले हैं। अब सोमवार को नम्बर लगेगा।

मैं कम्पाउंडर से आज ही दिखाने का आग्रह कर ही रहा था कि डॉक्टर साहब चैम्बर से घर जाने के लिए बाहर आए। मुझे देखा तो ठिठक गए फिर बोले आप आए हैं सर! क्या बात है?

कहना नहीं होगा कि डॉक्टर साहब वही सज्जन थे जिन्हें स्कूल में मैंने छतरी से गाड़ी तक पहुंचाया था। डॉक्टर साहब ने बच्ची से मेरा रिश्ता पूछा। मेरे मित्र पाटिल साहब की बेटी है। हम लोग एक ही सोसाइटी में रहते हैं।

उन्होंने बच्ची को देखा कागज पर दवा लिखी और कम्पाउंडर को हिदायत दी - यह इंजेक्शन बच्ची को तुरंत लगा दो और दो-तीन दिन की दवा अपने पास से दे दो।

मैंने एतराज किया तो बोले - अब कहाँ आप इस बरसाती रात में दवा खोजते फिरेंगे सर! कुछ तो अपना रंग मुझ पर भी चढ़ने दीजिए।

बहुत कहने पर डॉक्टर साहब ने न फीस ली और न ही दवा का दाम और अपने कम्पाउंडर से बोले - सर, हमारे मित्र हैं, जब भी आयें तो आने देना।

गाड़ी तक पहुंचाने आये और कहा - सर, आप जैसे निःस्वार्थ समाजसेवी क्या इसी दुनिया में रहते हैं?

मनुष्य द्वारा समाज व देश में समय-समय पर अनेक प्रकार की सेवाएं दी जाती हैं लेकिन उनमें यदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप कहीं स्वार्थ छुपा हुआ है तो वह सेवा, सेवा नहीं कहलाती।

**बिहार-मोतीपुर।** केसरिया,पू.च. उपसेवाकेन्द्र के 16वें वार्षिकोत्सव पर सम्मान समारोह के आयोजन पश्चात् शोभा यात्रा निकाली गई। इस मौके पर मोतीपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. रामनाथ भाई, ब्र.कु. सुधीर भाई, शिवहर से ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. रिंकी बहन, डॉ. परमेश्वर, डॉ. अशर्फी सहित कई लोग उपस्थित रहे।